विश्व में अमेरिकन फिल्म नॉयर के उद्भव, विस्तार, सिनेमाई प्रविधि, एवं भारतीय हिंदी सिनेमा पर प्रभाव का एक अध्ययन

शोध सारांशिका

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. गोविन्द जी पाण्डेय

प्रोफेसर एव ंविभागाध्यक्ष

शोधार्थी

अंकित दीक्षित

नामांकन संख्या : 720 / 14

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग,

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ, उत्तरप्रदेश

विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ- 226025

प्रस्तावना

विश्व सिनेमा के पटल पर 1895 को लुमियर बंधुओ द्वारा प्रदर्शित फिल्म ने सबको आश्चर्य चकित कर दिया | लोगो की कल्पना से परे जब उन्होंने आम लोगो की चलती –फिरती तस्वीर को स्क्रीन पर प्रोजेक्ट किया तो लोगो की चीख निकल गयी | अपनी तरफ आती हुई ट्रेन को असली समझ कर जब लोग भागने लगे तो सभी को इस माध्यम की शक्ति का उसी समय एहसास हो गया | फिल्म नॉयर एक सिनेमाई शब्द है| मुख्य रूप से इसका इस्तेमाल सनकी व्यवहार और यौन मंशा पर जोर देती हॉलीवुड की फिल्मों का वर्णन करने के लिए होता है | फिल्म नॉयर की अवधि आम तौर पर सन 1940 की शुरुआत से 1950 के अंत तक मानी जाती है। फिल्म नॉयर, काले और सफेद दृश्य शैली से जुड़ा हुआ है जिसकी जड़े जर्मन यथार्थवाद मे है|

सबसे पहले 1946 में फ्रेंच आलोचक नीनो फ्रैंक द्वारा फिल्म नॉयर शब्द गढ़ा गया। 1970 तक फिल्म उद्योग के पेशेवर लोग इस शब्द से अपरिचित थे। इस धारणा को व्यापक रूप से अपनाए जाने तक, कई क्लासिक फिल्म नॉयर को नाटक का रूप माना गया था |

फिल्म नॉयर अक्सर एक दृश्य शैली, पारंपरिक फिल्म बनाने के भीतर अपरंपरागत तरीके से बनायीं गयी फिल्म तकनीक है | फिल्म नॉयर विभिन्न शैलियों की एक किस्म है, उदाहरण के तौर पर पुलिस प्रक्रियात्मक फ़िल्मे, सामाजिक समस्याओं पर फ़िल्मे अथवा गैंगस्टर आधारित फिल्में नॉयर जौनर ने अमेरिका में जन्म लिया है, तथा जर्मन इक्सप्रेस्सियुनिज़म के संश्लेषण से उभर रहा है | सामान्य तौर पर, फिल्म नॉयर, सन् 1940 से 50 के दशक अंत की उन हॉलीवुड की फिल्मों को दर्शाता है जो अंधेरा, चालाक शहर की सड़क, अपराध और भ्रष्टाचार की दुनिया में

चित्रित करने के लिए के लिए जानी जाती है। फिल्म नॉयर की बेहतर समझ के लिए मोटे तौर पर तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है,

1. युद्ध के दौरान (1941-46)

2. युद्ध के बाद यथार्थवादी अवधि (1945-49)

3.अंतिम चरण (1949-53)।

भारत में फिल्म नॉयर के प्रभाव को मोटे तौर पर तीन भागो में बाँटा जा सकता है

Classical film Noir स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से 1970 तक

Trans noir 1970 के बाद से 1991 तक

Neo- noir 1911 से 2019 तक

फिल्म नॉयर की एक खूबी यह भी है, हर किसी में सर्वश्रेष्ठ बाहर लाना कई निर्देशक, कैमरामैन, अभिनेता, पटकथा लेखक ने अपना सर्वश्रेष्ठ फिल्म नॉयर में दिया है |

फिल्म नॉयर मेजानसे

मेजानसे फिल्म का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है | अभिनेता, परिधान, मेकअप और अन्य सभी प्राकृतिक और कृत्रिम तत्व है जोकि कि दृश्य की विशेषताएँ बताते है वो इसमे शामिल है | फिल्म नॉयर मेजानसे में शहरी क्षेत्रों का उपयोग ,लो-की लाइट तकनीक का उपयोग, गाउन रूपी महिला वेशभूषा, टिमटिमाती लाइट, गैंगस्टर, मर्डर, शहरी गलियां, गन्दगी और नायक और नायिका का ग्रे चित्रण का भरपूर उपयोग किया गया है | निर्देशक अनुराग कश्यप, मधुर भंडारकर, दिबाकर बनर्जी और विशाल भारद्वाज, देवाशीष मखीजा व कुछ पुराने निर्देशक जिन्होंने जाने

अनजाने फिल्म नॉयर स्टाइल पर आधारित फिल्मों का निर्माण किया है | हालाकि भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में फिल्म नॉयर की चर्चा उतनी नहीं होती है पर उस तरह के दृश्य और कम्पोजीशन काफी मिलते है |

समस्या का कथन-

सिनेमा आज भूमंडलीकरण के दौर मे है | समय के साथ भारतीय हिंदी सिनेमा ने दुनियाभर की प्रमुख सिनेमा तकनीक को खुद मे आत्मसात किया है | फिल्म नॉयर भी अब भारतीय दर्शको के लिए अनजान शब्द नहीं है | दिन-प्रतिदिन यह भारत मे प्रभावशाली रूप और विस्तार ले रहा है। इस तरह की फिल्मों ने भारतीय फिल्मों और फिल्मकारों को न सिर्फ प्रभावित किया है बल्कि ढेरो फिल्म बॉलीवुड में बनायीं गयी है जहा कथानक से लेकर सिनेमेटोग्राफी , एक्टिंग , आख्यान संरचना आदि पर फिल्म नॉयर का प्रभाव देखा जा सकता है | इस शोध के माध्यम से भारतीय फिल्मो में पात्र, कथानक, कैमरा, कम्पोजीशन आदि पर जो प्रभाव पड़ा है उसको देखने का प्रयास किया गया है |

विश्व मे अमेरिकन फिल्म नॉयर का उद्भव, विस्तार, सिनेमाई प्रविधि एवं भारतीय हिंदी सिनेमा पर प्रभाव का एक अध्ययन

शोध का महत्व

इस शोध के माध्यम से हम जान पायेगे की,किस तरह अमेरिकन फिल्म नॉयर ने भारतीय हिंदी सिनेमा मे प्रवेश किया और विसुअल ग्रामर में उनकी छाप स्पष्ट दिखायी पड़ती है | फिल्म नॉयर का जब जन्म हुआ तो लोगो को इस तकनीक का कोई पता नहीं था| समाज में हो रही घटनाओ को जब फिल्म निर्देशको ने परदे पर दिखाना शुरू किया तो लोग आश्चर्य में पड गए | फिल्म नॉयर की शैली सिर्फ अमेरिका में ही नहीं थी उसका प्रभाव विश्व भर के सिनेमा पर पड़ा | ये न सिर्फ

उन्नीस सौ चालीस से पचास के दौर में रही बल्कि इसका पुनरुथान उन्नीस सौ अस्सी से नब्बे के दौरान भी रहा और आज भी ऐसी फ़िल्में लगातार बन रही है. फिल्म में जितनी बात जर्मन यथार्थवाद, न्यू वेव सिनेमा की होती है उतना स्थान फिल्म नॉयर को नहीं मिला, अगर हम इस तरह की फिल्मों के प्रभाव क्षेत्र पर नजर डाले तो हमे पूरे विश्व में इसका प्रभाव दिखाई पड़ता है | इसी को ध्यान में रखकर भारतीय दर्शक और फिल्मकरो पर इसके प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है|

साहित्य समीक्षा

संपादक सिनेमा मैगज़ीन लोंस अन्गेलेस और पुस्तक लेखक ट्रान्सेंडैंटल स्टाइल ऑन फिल्म्स पॉल स्च्रादर लिखते है कि, फिल्म नॉयर का फिल्म इतिहास मे निश्चित समय है ठीक जर्मन यथार्थवाद और फ्रेंच न्यूवेव की तरह | सामान्य तौर पर विश्व सिनेमा मे फिल्म नॉयर का कालखंड 1940 से 1950 के आखिर तक माना जाता है| नॉयर फ़िल्म मे अन्धकारमय विश्व,चालक शहर,अपराध और भ्रष्टाचार विषयों चित्रण होता है | पॉल आगे कहते है, हर फिल्म समीक्षक फिल्म नॉयर को अपने तरीके से परिभाषित करता है। इसके लिए उनके अपने सबूत भी है|

एक अन्य फिल्म नॉयर अध्ययनकर्ता विवियन सोब्चैक,हमारा ध्यान इसकी मेजानसे खूबियों की तरफ खीचते है | उनके अनुसार, कॉकटेल लाउन्ज, नाइट क्लब, डांस हॉल, बार, होटलरूम, कॉफ़ी हाउस, बस और ट्राम स्टेशन का प्रयोग शूटिंग लोकेशन के लिए आमतौर पर होता है |

लक्ष्य

अध्ययन का लक्ष्य भारतीय हिंदी सिनेमा मे फिल्म नॉयर के इस्तेमाल से हुए बदलाव का पता लगाना है। फिल्म नॉयर के उद्भव के समय ज्यादा लोगो को ये पता नहीं चल पाया कि इस तरह का कोई फिल्म निर्माण की नयी स्टाइल ने जन्म ले लिया है | पर जब फिल्म समीक्षकों ने देखा की फ़िल्मकार कुछ इस तरह की फिल्म का निर्माण कर रहे है जो अभी तक चल रहे चलन से कुछ अलग थी तो उनका ध्यान फिल्म नॉयर की ओर गया | कुछ फ्रेंच लेखको ने देखा की अमेरिकी सिनेमा में कुछ नये तरह के विसुअल दिखाई दे रहे थे तो उन्होंने इसे फिल्म नॉयर का नाम दिया | ये उस तरह की फिल्मे थी जिसमे नायक में ही खलनायक भी छुपा होता था | अँधेरी शहर की गलियाँ, संकरे रास्ते, निराशा से पूर्ण जीवन, हत्या, अपराध की दुनिया जहाँ हीरो अपने आप को तन्हा पता है | हीरो के सामने भविष्य अंधकारमय है और उसे सच्चे प्यार की तलाश है जो कही दूर तक दिखाई नहीं देता है | एक ऐसी दुनिया जहाँ सच्चा इन्सान बड़ी कठिनाई से जीवन गुजार पाता है | इन सारी बातों को अगर हम देखे तो उन्नीस सौ सत्तर के दशक की फिल्मों में हमे भारत में ये बहुतायत दिखाई पड़ता है. स्वतंत्रता की खुमारी उतरने के बाद भारत में रोजगार, विकास, गरीबी और आर्गनाइज्ड क्राइम अपने चरम पर है | उसी समय एक ऐसे नायक का जन्म होता है जो सत्ता के खिलाफ लड़ता है | वो आम आदमी का प्रतिनिधित्व करता है | अमीरों से लड़ता है और गरीबो को उनका पैसा बाँट देता है. उसका अपना जीवन निश्चित नहीं है | दीवार फिल्म का हीरो अमिताभ बच्चन लोगो की रक्षा करते – करते कब जुर्म की दुनिया का बादशाह हो जाता है उसे खुद पता नहीं चलता | पर जब वो अपने भाई के हांथो ही मारा जाता है तो भी दर्शकों को उससे सहानुभूति होती है|

इस शोध का भी लक्ष्य अमेरिकन फिल्म नॉयर के उद्भव के साथ जो फिल्म निर्माण के क्षेत्र में बदलाव आया है उसको रेखांकित करना और भारतीय फिल्मों

में किस तरह से फिल्म नॉयर के विसुअल्स ने अपनी पैठ बना ली है उसे लोगो के सामने रखना है |

उद्देश्य

फिल्म नॉयर की सिनेमाई तकनीक का अध्ययन।

फिल्म नॉयर मे नायक और खलनायक के चित्रण का अध्ययन।

फिल्म नॉयर में इस्तेमाल किये गए शॉट्स और कैमरा के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना |

नॉयर फिल्मो मे इस्तेमाल निशान एवं चिन्ह तथा उनके अर्थ का अध्ययन|

फिल्म नॉयर की फिल्मों के कथानक और विषय वस्तु का विश्लेषण |

फिल्म नॉयर में महिला चरित्र के बदलते रूप का विश्लेषण करना |

फिल्म नॉयर में नियतिवाद के प्रभाव का अध्ययन करना |

शोध के प्रश्न :

1) क्या फिल्म नॉयर इस्तेमाल में किये गए कैमरा मूवमेंट और शॉट्स कही न कही जर्मन अभिव्यक्तिवाद, इटालियन नव-यथार्थवाद, अस्तित्ववादी सिनेमा से प्रेरित दिखाई पड़ता है ?

2)क्या फिल्म नॉयर में नायक और खलनायक की भूमिका के बीच की लाइन को मिटा दिया था ?

3) क्या फिल्म नॉयर में ज्यादातर फिल्मो में नगरीय जीवन के उस पक्ष को दिखाया गया है जो उसका निराशवादी चेहरा प्रस्तुत करता है ?

4)फिल्म नॉयर का जीवन कम होने के बाद भी क्या उसे एक अलग फिल्म स्टाइल के रूप में सिनेमा के इतिहास में जगह मिली है?

5)क्या भारतीय फिल्मों में फिल्म नॉयर की सिनेमाई तकनीक का इस्तेमाल अभी भी हो रहा है ?

6) क्या फिल्म नॉयर में महिला चरित्रों की भूमिका बदल गयी है ?

7) क्या फिल्म नॉयर से प्रभावित फ़िल्में नियतिवाद से प्रभावित है ?

शोध प्रविधिया

फिल्म नॉयर के बारे में शोध करने के लिए सबसे पहले अमेरिका की उन फिल्मों को देखकर जिसे इस श्रेणी में रखा जाता है एक पैरामीटर बनाया | इसके बाद सम्बंधित साहित्य के सर्वे द्वारा उन फिल्मो का चयन किया जिसमे फिल्म नॉयर की तकनीक या विशेषता कही भी नजर आयी | चुकि ये एक बड़ा भाग था और शोध की दिशा का निर्धारण इसी बात से होना था की वो फ़िल्में कौन – कौन सी होंगी जिसे फिल्म नॉयर के विभिन्न पहलुओं को जानने के लिए अध्ययन किया जाये | इसमें शोधार्थी ने लगातार सम्बंधित साहित्य का अध्ययन कर कई दशको से उन बीस फिल्मों का चयन किया जो फिल्म नॉयर और उसके प्रभाव और पुनरुत्थान को रेखांकित करती है |

शोध पद्धति : वर्णनात्मक और ऐतीहासिक पद्धति, विन्यास् क्रमात्मक एवं रूप निदर्शनात्मक

निदर्शन तकनीक : उद्देश्य परक

आंकड़ा संग्रहण की तकनीक : मूल्यांकन चार्ट (विसुअल एनालिसिस तकनीक), निरिक्षण, कंटेंट एनालिसिस

शोध सीमाए

चूंकि अनुसंधान समस्या बहुत व्यापक है, इसे परिसीमित करने की जरूरत है। अध्ययन का केंद्र हिंदी सिनेमा के विभिन्न दशको से चुनी हुई फ़िल्में होंगी | इन फिल्मों का चयन इनके कथानक के आधार पर किया गया है| इन फिल्मों के चयन में पूरी सावधानी के साथ फिल्म नॉयर के विभिन्न बिन्दुओ को ध्यान में रख कर किया गया है |

अध्याय

पहला अध्याय - प्रस्तावना एवं शोध पद्धति |

दूसरा अध्याय - विश्व सिनेमा में फिल्म नॉयर का आगमन|

तीसरा अध्याय – सिनेमा निर्माण की अन्य प्रविधिया और
फिल्म नॉयर |

चौथा अध्याय – भारतीय हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा|

पांचवा अध्याय - हिंदी सिनेमा और फिल्म नॉयर:चुनी हुई फिल्मो का विश्लेषण

छठवा अध्याय- निष्कर्ष और समान्यीकरण |

सन्दर्भ सूची।

सन्दर्भ

गनती,टी.(2013).बॉलीवुड: आ गाइड टू पॉपुलर सिनेमा.रौत्लेद्गे |

राइट,न.स.(2005).बॉलीवुड एंड पोस्त्मोदेर्निस्म. एडिनबर्घ यूनिवर्सिटी|

मुलर,एड्डी(1988). दा लॉस्ट वर्ल्ड ऑफ़ फिल्म नॉयर.पेपरबैक |

फोस्टर,हिस्र्च(1983).दा डार्क साइड ऑफ़ स्क्रीन.पेपरबैक |

ग्रन्थसूची

सिल्वर,अलेन;फिल्म नोयर रीडर |

अग्निहोत्री,राम अवतार;आर्टिस्ट एंड डेयर फिल्म्स ऑफ मॉडर्न हिंदी सिनेमा |